दक्ष®

27 मई 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

No.1

ग्रेड-1st स्कूल व्याख्याता

इतिहास, कला एवं संस्कृति

भारत एवं राजस्थान

अनिवार्य प्रथम प्रश्न पत्र - Part-I

अत्यंत महत्त्वपूर्ण 30 अंक सुनिश्चित करें।

महेन्द्र कुमार यादव

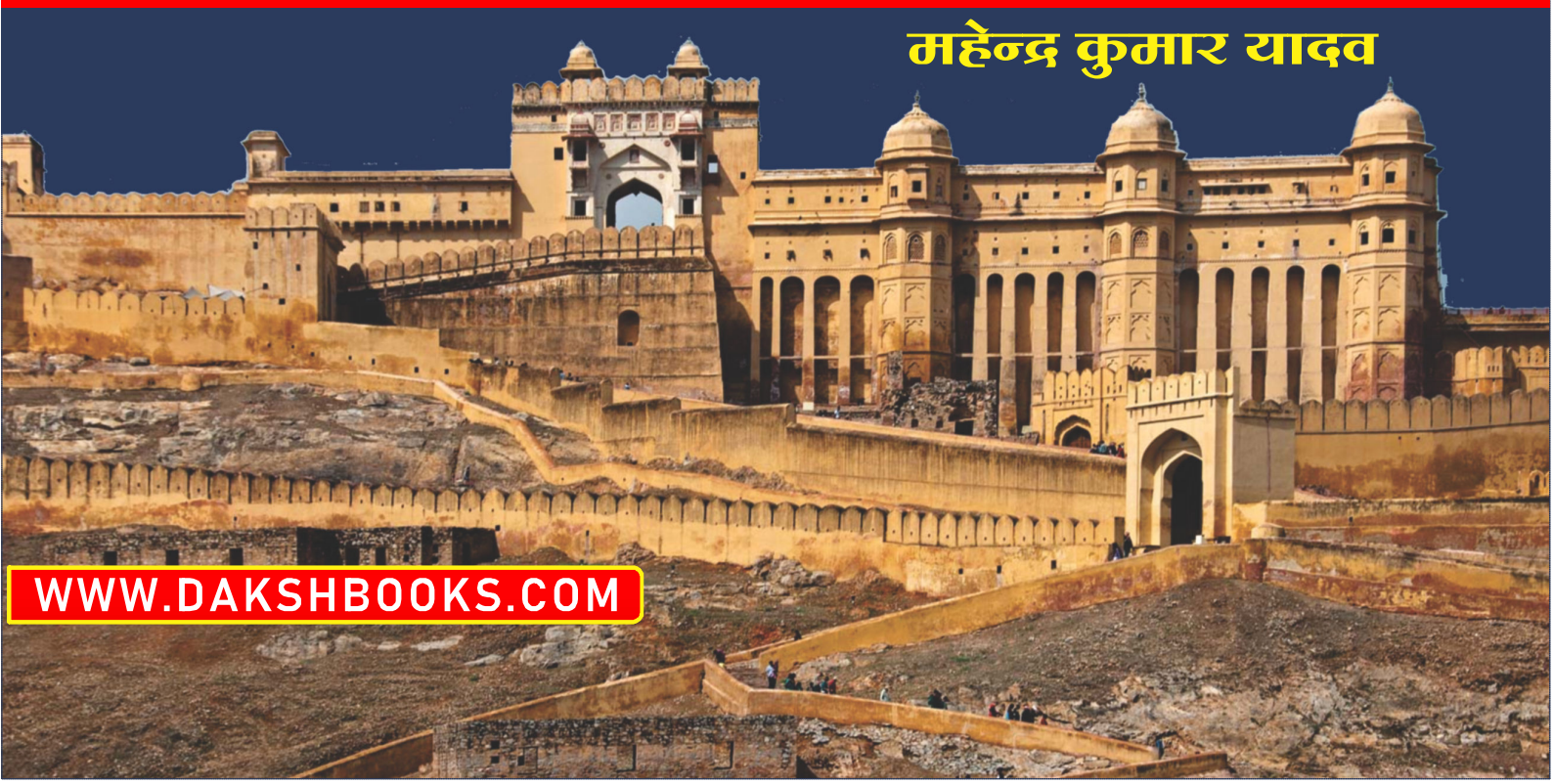

WWW.DAKSHBOOKS.COM

दक्ष®

27 मई 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

ग्रेड-1st स्कूल व्याख्याता

अनिवार्य प्रथम प्रश्न पत्र - Part-I

इतिहास, कला एवं संस्कृति

भारत एवं राजस्थान

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 30 अंक सुनिश्चित करें।

NCERT, RBSE एवं प्रमाणिक पुस्तकों पर आधारित

- ज्यादा से ज्यादा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का समावेश
- विगत वर्षों की प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का समावेश
- प्रत्येक अध्याय को सिलेबस अनुसार वर्गीकृत करके टॉपिक का विवरण
- राजस्थान एवं अन्य राज्यों में हुई प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

लेखक

महेन्द्र यादव

M.A., NET व्याख्याता (इतिहास)

सम्पादक

पूजा यादव

M.A., B.Ed., Expert G.K. & G.S.

दक्ष प्रकाशन

(A Unit of College Book Centre)

WWW.DAKSHBOOKS.COM

प्रकाशक :
परितोष वर्धन जैन
कॉलेज बुक सेन्टर
- A-19, सेठी कॉलोनी,
जयपुर-302 004

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

लेजर टाईपसैटिंग :
पूजा एण्टरप्राईजेज़
जयपुर

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS

for Examination for the post of

LECTURER (SCHOOL EDUCATION)

PAPER-I · GENERAL AWARENESS AND GENERAL STUDIES

1. History of Rajasthan and Indian History with special emphasis on Indian National Movement

- Development of Literature, Art and Architecture during Gupta and Mughal Period.
- Freedom Struggle of 1857. Prominent Leaders of National Movement, V.D. Savarkar, Bankim Chandra, Lal, Bal, Pal, Chandra Shekhar Azad, Bhagat Singh, Sukhdev, Ras Behari Bose, Subhash Chandra Bose, Social and Religious Renaissance- Raja Ram Mohan Roy, Dayanand Saraswati and Vivekanand.
- National movement with special reference to Mahatma Gandhi, Jawahar Lal Nehru, Vallabhbhai Patel, Maulana Azad and B.R.Ambedkar.
- Ancient Culture & Civilization of Rajasthan- Kalibangan, Ahar, Ganeshwar, Bairath.
- **History of Rajasthan from 8th to 18th Century :** Gurjar Pratihars, Chauhans of Ajmer, Relations with Delhi Sultanate¡V Mewar, Ranthambore and Jalore, Rajasthan and Mughals ¡V Rana Sanga, Maharana Pratap, Mansingh of Amer, Chandrasen, Rai Singh of Bikaner, Raj Singh of Mewar.
- **History of Freedom Struggle in Rajasthan :** Revolution of 1857, Political Awakening, Prajamandal Movements, Peasants and Tribal Movements.
- Integration of Rajasthan.
- **Society and Religion :** Lok Devta and Devian, Saints of Rajasthan, Architecture–Temples, Forts and Palaces, Paintings–Various Schools, Fairs and Festivals, Customs, Dresses and Ornaments, Folk Music and Dance, Language and Literature.

अमूल्य सुझावों के लिए मार्गदर्शकों का आभार

श्री अजीत कुमार झा (प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय), **श्री कृष्ण यादव** (अभिव्यक्ति क्लासेज, जयपुर), **श्री अशोक शर्मा** (RAS), **श्री अशोक सैनी** (शौर्य क्लासेज, उदयपुर), **श्री अजय जखराणा** (RES, अलवर), **श्री विक्रम कसाणा** (अशोका कोचिंग, कोटपूतली), **चाणक्य क्लासेज** (अजमेर), **आर्यवीर कोचिंग सेन्टर** (शाहपुरा), **श्री मीठालाल** (देहरादून क्लासेज, दौसा), **अनुपम क्लासेज** (रींगस), **दिशा कोचिंग** (पावटा), **श्री अनुज यादव** (MGI), **वेदांग क्लासेज** (थोई), **विनायक क्लासेज** (श्रीमाधोपुर), **श्री मुकेश बांगड़ा** (RES, नागौर), **श्री त्रिलोक जायसवाल** (RES, टोंक), **डॉ. सुभाष यादव** (मनोविज्ञान), **श्री मनमोहन सिंह** (RES, कोटपूतली), **श्री सुरेश यादव** (RES, प्रागपुरा), **श्री बाबूलाल यादव** (ACBEO, शाहपुरा), **श्री जयराम जाट** (राज.शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) जिला कोषाध्यक्ष), **श्री महेन्द्र सिंह कलवानियाँ** (RES शाहपुरा), **श्री रोहिताश यादव** (RES शाहपुरा), **श्री एम.डी. यादव** (RES मनोहरपुर), **मुकेश यादव** (S.Th, आंतेला), **श्री गोपालराम यादव** (S.Th, अलवर), **दिनेश जिलोवा** (RES), **श्री नारायण यादव** (प्रधानाध्यापक), **श्री भोजराज कपूरिया** (RES)

Special Thanks to : **Shri Kashi Prasad Sharma** (Principal), **Shri Ramkaran Yadav** (RES), **Shri Ramsingh Meena** (RES), **Shri Shiv Kumar Sharma** (RES), **Anita Barala** (S.Th) and **All Staff BSND**, Chimanpura.

मुद्रक :
के.डी. प्रिन्टर्स
जयपुर।

Code No.: D-614

- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुन:उत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फॉटोकॉपी, रिकॉर्डिग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाईटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाईन, कवर डिजाईन, सेंटिंग, शिक्षण -सामग्री, विषय-वस्तु पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है, पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ ग़लतियों/कमियों का रह जाना सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।
- सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राज.) होगा।

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

1 गुप्तकाल के दौरान साहित्य, कला एवं स्थापत्य का विकास
[Development of Literature Art and Architecture during Gupta Periods] 1
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 7

2 मुगलकाल के दौरान साहित्य, कला एवं स्थापत्य का विकास
[Development of Literature, Art & Architecture during Mugal Period] 10
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 18

3 1857 का स्वतंत्रता संग्राम [Freedom Struggle of 1857] 21
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 25

4 राष्ट्रवादी आन्दोलन का उदय [Rise of Nationalist Movement] 28
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 37

5 राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता
[Prominent Leaders of National Movement] 42
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 48

6 सामाजिक व धार्मिक पुनर्जागरण [Social and Religious Renaissance] 51
राजाराम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी विवेकानन्द
[Raja Ram Mohan Roy, Dayanand Saraswati and Vivekanand]
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 55

7 राष्ट्रीय आन्दोलन [National Movement] 59
महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, मौलाना आजाद एवं बी. आर. अम्बेड़कर के विशेष संदर्भ में
[with Special Reference to Mahatma Gandhi, Jawahar Lal Nehru, Vallabhbhai Patel, Maulana Azad and B.R. Ambedker]
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 73

8 राजस्थान की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता
[Ancient Culture & Civilization of Rajasthan] 78
कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर बैराठ [Kalibangan, Ahar, Ganeshwar, Bairath]
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 80

9 दिल्ली सल्तनत के साथ संबंध : मेवाड़, रणथम्भौर व जालौर
[Relations with Delhi Sultanate : Mewar, Ranthambore and Jalore] 82
गुर्जर प्रतिहार एवं अजमेर के चौहान (Gurjar Pratihars & Chauhans of Ajmer)
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 87

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

10 राजस्थान एवं मुगल [Rajasthan and Mughals] 88

सांगा, प्रताप, आमेर का मानसिंह, चन्द्रसेन, बीकानेर का रायसिंह, मेवाड़ का राजसिंह (Sanga, Pratap, Mansingh of Amer, Chandrasen, Raisingh of Bikaner, Raj Singh of Mewar)

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 94

11 राजस्थान में 1857 की क्रांति, राजनीतिक जागृति, प्रजामंडल आन्दोलन [Revolution of 1857, Political Awakening, Prajamandal Movement in Rajasthan] 96

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 106

12 राजस्थान में किसान व जनजातीय आंदोलन [Peasants and Tribal Movements in Rajasthan] 109

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 115

13 राजस्थान का एकीकरण [Integration of Rajasthan] 117

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 122

14 राजस्थान के लोक संत, देवता एवं देवियाँ [Lok Saints, Devta & Devian of Rajasthan] 123

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 132

15 स्थापत्य : मंदिर, किले एवं महल [Architecture : Temples, Forts & Palaces] 136

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 147

16 राजस्थान में चित्रकला : विभिन्न स्कूल [Paintings in Rajasthan : Various Schools] 149

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 155

17 मेले व त्योंहार/उत्सव, रीति-रिवाज, वस्त्र एवं आभूषण [Fairs & Festivals, Customs, Dresses & Ornaments] 157

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 167

18 राजस्थान के लोक संगीत एवं नृत्य [Folk Music and Dance of Rajasthan] 169

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 176

19 राजस्थान में भाषा और साहित्य [Language and Literature in Rajasthan] 178

❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 186

5. क्षेत्रीय भाषाएँ एवं साहित्य

❖ मुगलकाल में क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास हुआ। बांग्ला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उडिया, राजस्थानी, तमिल व तेलुगू में विभिन्न प्रकार के ग्रन्थ लिखे गए।

क्र.सं.	मुगलकालीन क्षेत्रीय भाषा की कृतियाँ	उनके लेखक
1.	रामचरित मानस (अवधी भाषा)	तुलसीदास
2.	रसगंगाधर एवं गंगालहरी	पंडित जगन्नाथ
3.	प्रेमवाटिका	रसखान
4.	चौरासी वैष्णवों की वार्ता	विट्ठलनाथ
5.	चैतन्य चरितामृत	कृष्णदास कविराज
6.	चैतन्य भागवत्	वृंदावन दास
7.	भक्ति रत्नाकर	नरहरि चक्रवर्ती
8.	सर्वदेश वृतान्त संग्रह (संस्कृत)	ठाकुर महेशदास

Note :– जॉर्ज ग्रियर्सन ने रामचरित मानस को 'हिन्दूस्तान के करोड़ों लोगों की एकमात्र बाईबिल' बताया है।

मुगलकालीन कला एवं स्थापत्य

मुगलकालीन स्थापत्य कला

मुगलकाल में इस्लामी एवं राजपूत शैलियों के मिश्रण से स्थापत्य कला का विकास हुआ। मुगल शासकों ने भव्य महलों, किलों, द्वारों, मस्जिदों एवं बागों का बड़े पैमाने पर निर्माण करवाकर इस काल के प्रमुख नगरों को स्थापत्य से सजा दिया।

मुगल स्थापत्य की मुख्य विशेषताएँ

1. मेहराब व गुम्बदों का प्रयोग इस काल की मुख्य विशेषता है।
2. मस्जिदों व मकबरों के चारों ओर मीनारों का प्रयोग।
3. **चार बाग शैली**—उसके अन्तर्गत किलों एवं महलों के प्रांगण में एक वर्गाकार खण्ड को चार समान बागों में विभाजित किया जाता था। उनके बीच बहते पानी का प्रयोग महलों के स्थापत्य को आकर्षक बनाता था।

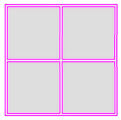
चित्र: चार बाग शैली

4. **अरबेस्क विधि**—अरबेस्क से आशय ज्यामितीय एवं वानस्पतिक अलंकरण से है। इमारतों में ऐसा अलंकरण एक सजावटी पैटर्न का निर्माण करता था, जो इस्लामिक स्थापत्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता थी।
5. कुरान की आयतों का सुलेखन।
6. भवनों में **जाली का जटिल काम** इस्लाम धर्म के महत्त्व का प्रतीक है।

चित्र: अरबेस्क डिजाइन

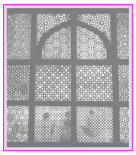
चित्र : जाली का काम

7. **पित्रादूरा**—संगमरमर के पत्थरों पर हीरे जवाहरात से की गई जड़ावट को पित्रादूरा कहते है।

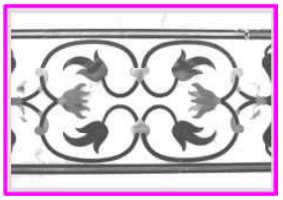
चित्र : पित्रा–दूरा का नमूना

प्रमुख मुगल बादशाहों के समय स्थापत्य का विकास

बाबर कालीन स्थापत्य

❖ बाबर ने **आगरा** का **'आराम बाग'** बनवाया था।
❖ पानीपत की **काबुली मस्जिद** एवं रूहेलखण्ड में **संभल की जामा मस्जिद** बाबर द्वारा ही बनवाई गई।
❖ 1528 ई. में बाबर के नाम पर उसके सेनापति मीर बकी ने अयोध्या में **'बाबरी मस्जिद'** का निर्माण करवाया था।

हुमायूँ कालीन स्थापत्य

❖ हुमायूँ ने दिल्ली में **'दीन–पनाह'** नामक नगर बसाया था।

Note :– शेरशाह सूरी ने **सहसराम** (बिहार) में अपना मकबरा बनवाया, जो हिन्दू–इस्लामिक कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना माना जाता है।

अकबर कालीन स्थापत्य

❖ अकबर के काल की पहली इमारत दिल्ली में बना हुमायूँ का मकबरा है। इसमें लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग एवं दोहरे गुम्बद शैली का प्रयोग किया गया है।

चित्र: हुमायूँ का मकबरा

❖ अकबर ने अपने स्थापत्य में **लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग** बड़े पैमाने पर किया था।
❖ **आगरा का किला** अकबर द्वारा बनवाया गया। **इलाहाबाद का किला** अकबर द्वारा निर्मित किलों में सबसे बड़ा है।
❖ अकबर ने आगरा के निकट **फतेहपुर सीकरी** में किलानुमा दुर्ग बनवाकर इसे सुंदर महलों से सजा दिया। यहाँ निर्मित **बुलंद दरवाजा** अकबर ने अपनी गुजरात विजय के उपलक्ष्य में बनवाया।

❖ कम्पनी के शासनकाल में भारतीय **धन का निष्कासन** इंग्लैंड को हुआ।

Note :– धन निष्कासन का सिद्धांत सर्वप्रथम **दादाभाई नौरोजी** ने अपनी पुस्तक 'पावर्टी एंड अन ब्रिटिश रुल इन इंडिया' में दिया। इन्होंने ही सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय की गणना भी की थी।

❖ अंग्रेजों द्वारा भारतीय रेल के निर्माण में अत्यधिक विदेशी पूंजी का निवेश किया जो 5% के लाभ की गारंटी पर आधारित था। शायद इसलिए **तिलक** ने कहा कि –**''भारतीयों द्वारा रेलवे का खर्च उठाना वैसा ही है जैसे दूसरे की पत्नी के शृंगार पेटी का खर्च उठाना।''**

Note :– 1853 ई. में डलहौजी के समय बम्बई से थाणे के बीच प्रथम रेलगाड़ी चलाई गई।

(5) सैनिक कारण

❖ भारतीय सेना के उच्च पद सिर्फ अंग्रेजों के लिए ही सुरक्षित थे एवं वेतन-भत्तों व पदोन्नति के संदर्भ में भी भारतीय सैनिकों से भेदभाव किया जाता था।

❖ समुद्र पार सेवा देने से सैनिकों में असंतोष व्याप्त था क्योंकि इसके बाद उन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार नहीं किया जाता था।

❖ 1854 ई. में डाकघर अधिनियम द्वारा सैनिकों को दी जाने वाली निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी गई।

(6) तात्कालिक कारण

❖ 1856 ई. में परम्परागत ब्राउन बैस बंदूकों के स्थान पर नई एनफील्ड रायफलों का प्रयोग शुरू हुआ, जिनके कारतूसों पर गाय व सूअर की चर्बी के प्रयोग की अफवाह 1857 की क्रांति का तात्कालिक कारण बनी।

Note :– चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग की प्रथम घटना कलकत्ता की **बैरकपुर छावनी'** में 29 मार्च 1857 ई. को घटी जहाँ **34 वीं N.I. रेजीमेंट** के जवान **मंगल पांडे** ने इन कारतूसों का प्रयोग करने से मना किया तथा लेफ्टिनेन्ट बाग व मेजर ह्यूसन की हत्या कर दी। इस आरोप में 8 **अप्रैल 1857** को मंगल पांडे को फाँसी दे दी गई।

1857 की क्रांति की योजना

❖ विद्रोहियों ने **31 मई 1857** को क्रांति शुरू करने की योजना बनाई थी किन्तु चर्बी लगे कारतूसों की घटना से क्रांति तय समय से पूर्व ही **10 मई 1857** को **मेरठ छावनी** से शुरू हो गई।

❖ क्रांति के प्रतीक के रूप में **'कमल का फूल और रोटी को चुना'** गया।

विद्रोह का आरम्भ व प्रसार

❖ **10 मई 1857** को मेरठ **20वीं नेटिव इन्फ्रेन्टी** के सैनिकों ने विद्रोह की शुरूआत की तथा शीघ्र ही दिल्ली पर कब्जा कर **बहादुरशाह जफर** को भारत का बादशाह एवं विद्रोह का नेता घोषित किया।

❖ शीघ्र ही यह विद्रोह लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बरेली, बिहार एवं मध्य व उत्तरी भारत के अनेक क्षेत्रों में फैल गया। विद्रोहियों को असंतुष्ट जमींदारों एवं शासकों ने अपना नेतृत्व प्रदान किया।

❖ **झांसी** में राजा **गंगाधर राव** की विधवा **रानी लक्ष्मीबाई** के नेतृत्व में 4 जून को विद्रोह की शुरुआत हुई। **17 मई 1858 ई.** को लक्ष्मीबाई जनरल ह्यूरोज से लड़ती हुई शहीद हो गई। इनकी मृत्यु पर ह्यूरोज ने कहा था – **''भारतीय क्रांतिकारियों में यहाँ सोई हुई औरत अकेली मर्द है।''**

❖ ग्वालियर में तांत्या टोपे ने विद्रोह का नेतृत्व किया वे नाना साहब के सेनापति थे। तांत्या टोपे का वास्तविक नाम **'रामचन्द्र पाण्डुरंग** था।

रानी लक्ष्मीबाई संक्षिप्त परिचय

- जन्म – वाराणसी में (19 Nov. 1835)
- मृत्यु – ग्वालियर में
- मूलनाम – मनिककर्णिका
- पति – गंगाधार राव
- उपनाम – महलपरी

❖ लखनऊ में वाजिद अली शाह की विधवा **बेगम हजरत महल (महकपरी)** ने **4 जून** को विद्रोह की शुरुआत की एवं अपने अल्पायु पुत्र **बिरजिस कादिर** को नवाब घोषित किया।

Note :–अवध में विद्रोह के समय वहाँ का चीफ कमिश्नर **हेनरी लारेन्स** था जिसकी विद्रोहियों से लड़ते हुए मृत्यु हो गई थी।

❖ बिहार में **जगदीशपुर** के जमींदार **कुंवरसिंह** ने विद्रोह का नेतृत्व किया।

❖ 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में यद्यपि उत्तरी भारत की अपेक्षा दक्षिणी में क्रांतिकारियों की संख्या कम थी।

दक्षिण भारत में विद्रोह के नेता

क्र. सं.	स्थान	नेतृत्वकर्ता
(1)	सतारा	रंगोजी बापू गुप्ते
(2)	केरल	विजय कुदारत कंजी मामा
(3)	मद्रास	सुल्तान बख्श, गुलाम गौस
(4)	कोयम्बटूर	मुलबागल स्वामी
(5)	कर्नाटक	छोटा सिंह, भीमराव
(6)	कोलापुर महाराष्ट्र	अण्णाजी फडनवीस

❖ उड़ीसा में **संभलपुर क्षेत्र** में **सुरेन्द्रशाही** तथा **उज्ज्वलशाही** नामक दो राजकुमारों ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया।

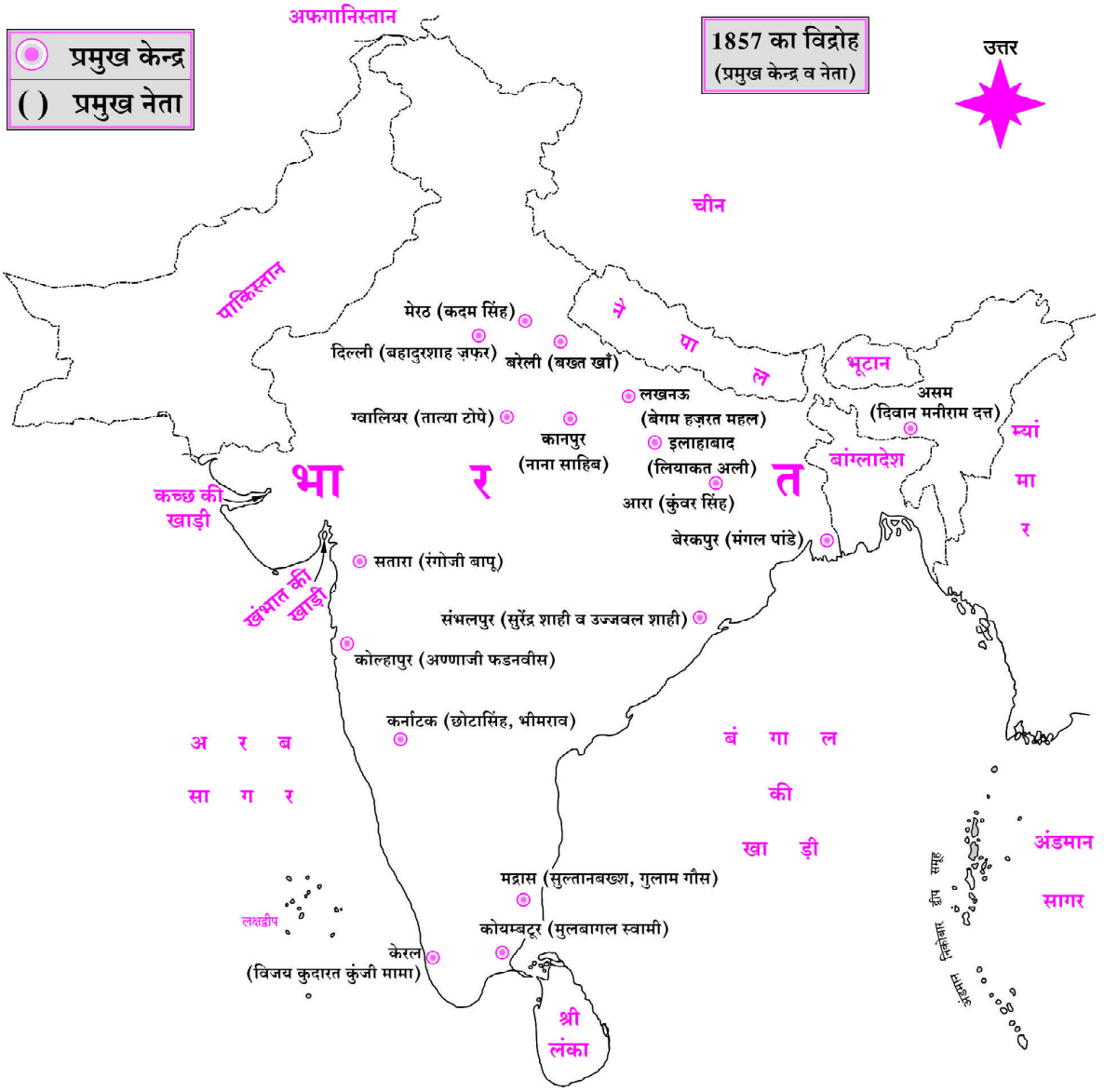

Note :–

1. दिल्ली में प्रतीकात्मक रूप से 1857 की क्रान्ति के नेता मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर थे, परन्तु वास्तविक नियंत्रण एक सैनिक समिति के हाथों में था, जिसके प्रमुख जनरल बख्त खान थे। इन्होंने ने ही बरेली के सैनिकों का नेतृत्व किया था तथा उन्हें दिल्ली लाए थे।
2. बिहार के कुंवर सिंह लगभग 80 वर्ष के होते हुए भी 1857 के विद्रोह के सम्भवतः सबसे प्रमुख सैनिक नेता एवं रणनीतिज्ञ थे।

❖ असम में दीवान **मनीराम** एवं **कंदर्पेश्वर सिंह** ने विद्रोह की शुरुआत की। बाद में मनीराम को फाँसी की सजा दी गई।

1857 का विद्रोह संक्षिप्त विवरण

केन्द्र	विद्रोही नेता	शुरुआत करने का दिन	दमन करने वाले अधिकारी
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून 1857	जनरल ह्यूरोज
कानपुर	नाना साहब,तांत्या टोपे	5 जून 1857	कॉलिन कैम्पबेल, हेवलॉक
लखनऊ	बेगम हजरत महल	4 जून 1857	कॉलिन कैम्पबेल
दिल्ली	बहादुरशाह जफर, बख्त खाँ	11–12 मई 1857	निकलसन एवं हडसन
जगदीशपुर	कुंवर सिंह (बिहार)	12 जून 1857	विलियम टेलर, आयर
फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला	जून 1857	जनरल रेनार्ड
इलाहाबाद	लियाकत अली	जून 1857	कर्नल लीन
बरेली	खान बहादुर खान (बख्त खाँ)	जून 1857	विसेंट आयर, कैम्पवेल

4 राष्ट्रवादी आन्दोलन का उदय [Rise of Nationalist Movement]

1857 की क्रांति के बाद भारत में राष्ट्रीय भावना के विकास के परिणामस्वरूप राष्ट्रवादी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ और अंग्रेजी राजसत्ता से मुक्ति प्राप्त करने हेतु भारतीय नेताओं एवं जनता ने एक लम्बा संघर्ष किया। उक्त अध्याय के अंतर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं का अध्ययन करना अपेक्षित है।

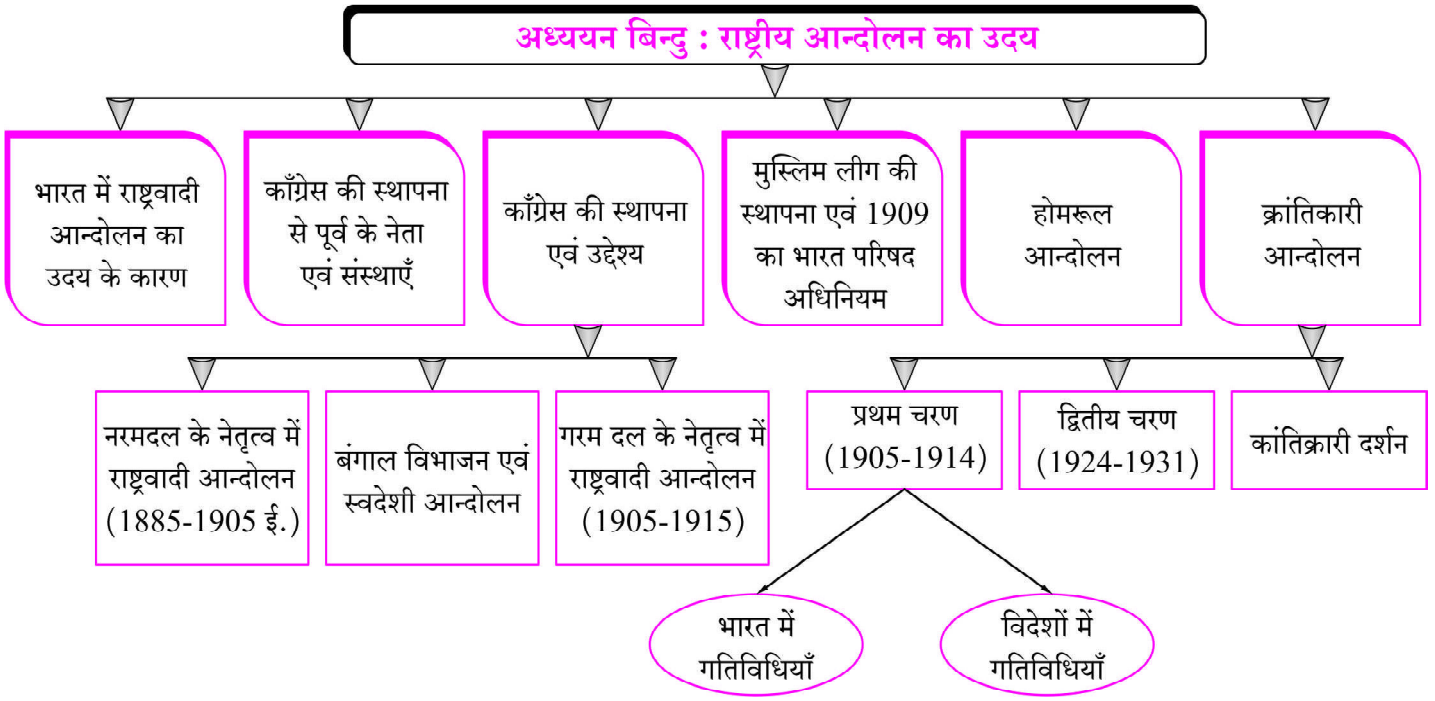

भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन के उदय के कारण

(1) अंग्रेजों की शोषकारी आर्थिक नीति

❖ किसानों से अत्यधिक लगान वसूली, भारतीय उद्योग धंधों को नष्ट करना तथा अंग्रेजों द्वारा ब्रिटेन के कारखानों में बनी वस्तुओं की खपत हेतु भारत का एक मंडी के रूप में उपयोग करना आदि। इस शोषण से किसान शिल्पी, मजदूर वर्ग, शिक्षित मध्यम वर्ग सभी प्रभावित थे।

(2) प्रशासनिक एकीकरण

❖ अंग्रेजों ने समूचे भारत पर अपना शासन स्थापित कर इसे राजनीतिक एवं प्रशासनिक एकता के सूत्र में बाँध दिया। एक समान कानून एवं न्याय व्यवस्था से भारतीय लोगों में पारस्परिक सम्पर्क बढ़ा, फलस्वरूप भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।

(3) प्रेस व साहित्य की भूमिका

❖ प्रेस एवं साहित्य ने लोगों को राजनीतिक शिक्षा दी तथा ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों की आलोचना की। संवाद कौमुदी, सोमप्रकाश, हिन्दू पेट्रियाट, **अमृत बाजार पत्रिका** आदि समाचार पत्रों एवं भारतेंदु हरिशचन्द्र का **'भारत दुर्दशा'** नामक नाटक, बंकिमचन्द्र चटर्जी का **'आनन्द मठ'** (उपन्यास) आदि साहित्यकारों ने भी राष्ट्रवादी भावना को जाग्रत किया।

(4) 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार

❖ राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों को समाप्त कर भारतीयों को एक करने का प्रयास किया तथा भारतीय संस्कृति के गौरव को उजागर कर आत्सम्मान की भावना का विकास किया।

(5) आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा

❖ जॉन लॉक के प्राकृतिक अधिकारों की शिक्षा, मेजिनी एवं गैरीबाल्डी जैसे यूरोपीय राष्ट्रवादियों के कार्यों तथा बर्क, जे.एस. मिल आदि के विचारों ने भारतीयों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत किया।

5 राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता [Prominent Leaders of National Movement]

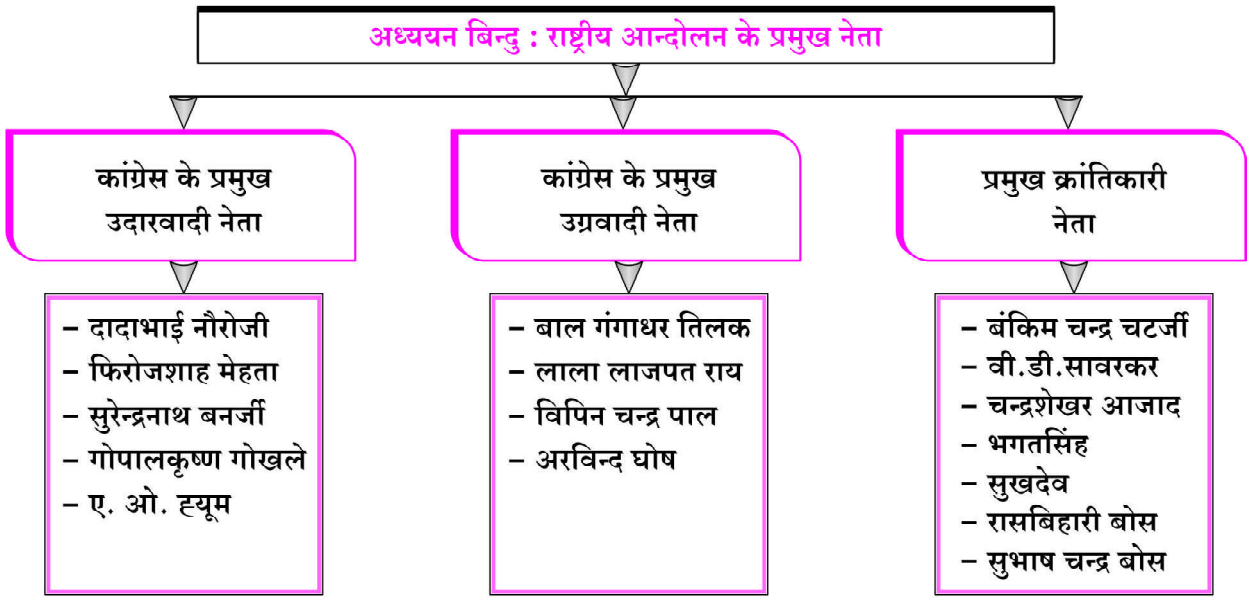

कांग्रेस के प्रमुख उदारवादी नेता

दादाभाई नौरोजी (1825-1917 ई.)

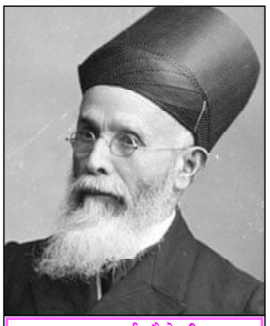
दादाभाई नौरोजी

- दादाभाई नौरोजी कांग्रेस के वयोवृद्ध नेता एवं महान देशभक्त थे।
- इनका जन्म **1825** ई. को बंबई में हुआ था। प्रारंभिक जीवन में इन्होंने शिक्षा विभाग में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य किया।
- दादाभाई नौरोजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के शुरुआती 20 वर्षों में ही तीन बार अध्यक्ष चुने गए:-
  (1) कलकत्ता अधिवेशन- 1886 ई. (यह कांग्रेस का दूसरा ही अधिवेशन था)
  (2) लाहौर अधिवेशन- 1893 ई.
  (3) कलकत्ता अधिवेशन-1906 ई.
- नौरोजी 1892 ई. में ब्रिटिश संसद के भी सदस्य निर्वाचित हुए।
- इन्होंने अपनी पुस्तक **'पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया'** में धन निष्कासन की प्रक्रिया एवं परिणामों पर चर्चा की।
- दादाभाई नौरोजी ने **'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन'**(1866) के माध्यम से ब्रिटिश जनता को भारतीयों के दु:खों से अवगत कराया।
- 1906 ई. में कांग्रेस के अध्यक्ष रहते हुए **स्वशासन** की स्थापना पर जोर दिया।
- दादाभाई नौरोजी भारत के पहले आर्थिक विचारक थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम भारत की राष्ट्रीय आय की गणना की थी।
- इन्हें **'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया'** भी कहा जाता है।
- 1917 ई. इनकी मृत्यु हुई। सी.वाई. चिन्तामणि ने उन्हें **''आत्माओं में महान, निर्णयों में अत्यधिक उदार एवं अजातशत्रु''** बताया है।

फिरोजशाह मेहता (1845-1915 ई.)

- 1845 ई. जन्में फिरोजशाह मेहता दादाभाई नौरोजी के प्रमुख अनुयायियों में थे।
- वे बंबई के **प्रख्यात वकील** थे, इनके प्रभावी व्यक्तित्व के कारण इन्हें **'बंबई का बेताज बादशाह'** कहा जाता था।
- 1872 ई. में वे बंबई कॉरपोरेशन के सदस्य और **1886** ई. में बंबई विधायिका के सदस्य बनाए गए।

7 राष्ट्रीय आन्दोलन [National Movement]

महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, मौलाना आजाद एवं बी. आर. अम्बेड़कर के विशेष संदर्भ में
[with Special Reference to Mahatma Gandhi, Jawahar lal Nehru, Vallabhbhai Patel, Maulana Azad and B.R. Ambedker]

अध्ययन बिन्दु

- गाँधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन
- नेहरू के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन
- पटेल के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन
- डॉ. भीमराव के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन
- मौलान आजाद के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन

उपर्युक्त का जीवन परिचय, प्रमुख गतिविधियाँ एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान

जीवन परिचय

जन्म	–	2 अक्टूबर 1869 ई. (पोरबंदर, गुजरात)
पूरा नाम	–	मोहनदास करमचंद गाँधी
पिता का नाम	–	करमचंद गाँधी
माता का नाम	–	पुतली बाई
जीवन साथी	–	कस्तूरबा गाँधी
शिक्षा	–	अल्फ्रेड हाई स्कूल, राजकोट
		बैरिस्टर – यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन
बच्चे	–	हरिलाल गाँधी, मणिलाल गाँधी, रामदास गाँधी, देवदास गाँधी
मृत्यु	–	30 जनवरी 1948
पुस्तकें	–	हिन्द स्वराज, सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा)
समाचार पत्र	–	यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन, इंडियन ओपिनियन।

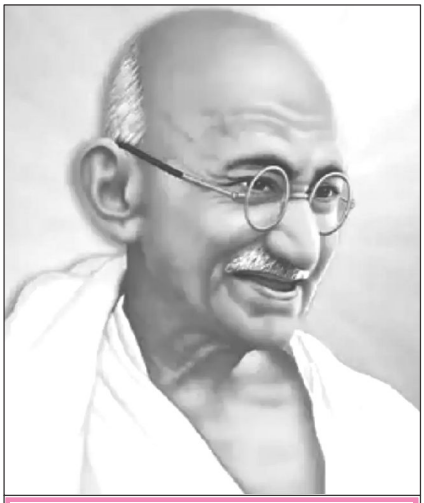

महात्मा गांधी

नोट – 2 अक्टूबर को **'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस'** एवं 30 जनवरी को **शहीद दिवस** मनाया जाता है।

गाँधी का दक्षिण अफ्रीका प्रवास एवं सत्याग्रह की शुरुआत

- 1891 ई. में इंग्लैण्ड से कानून की शिक्षा प्राप्त कर भारत आए तथा वकालत प्रारम्भ की।
- **1893 ई.** में एक पारसी फर्म – **'दादा अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी'** का मुकदमा लड़ने गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका गए।
- गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में **नटाल इंडियन कॉंग्रेस, टॉलस्टॉय फार्म** तथा **फीनिक्स फार्म** की स्थापना की।
- इन्होंने दक्षिण अफ्रीका में **इंडियन ओपिनियन** नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम सविनय अवज्ञा एवं सत्याग्रह की नीति का प्रयोग दक्षिण अफ्रीका में किया।
- दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति के विरुद्ध संघर्ष की शुरुआत गाँधीजी ने ही की। इनके संघर्ष के परिणामस्वरूप दक्षिण अफ्रीका में सरकार ने कई भेदभावपूर्ण नीतियों को रद्द किया एवं भारतीयों को सुविधाएँ प्राप्त हुईं।
- 9 जनवरी 1915 ई. को गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौटे और 1 वर्ष तक देश का भ्रमण कर भारतीय जनता की स्थिति को समझा।

Note :– **9 जनवरी** को गाँधीजी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के कारण इस दिन प्रतिवर्ष भारत का **प्रवासी भारतीय दिवस** मनाया जाता है।

घटना क्रम

- गाँधीजी ने **1 अगस्त 1920** को असहयोग आंदोलन प्रारम्भ करने की घोषणा कर दी।
- सितम्बर 1919 ई. के कांग्रेस के कलकत्ता में हुए विशेष अधिवेशन (अध्यक्षता–लाला लाजपतराय) में असहयोग संबंधी प्रस्ताव पास हुआ जिसकी पुष्टि दिसम्बर 1920 में नागपुर में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भी कर दी गई।
- असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव **चितरंजन दास** ने रखा जो प्रारम्भ में इसके विरोध में थे।
- असहयोग आन्दोलन के दौरान दो तरह की गतिविधियाँ हुईं

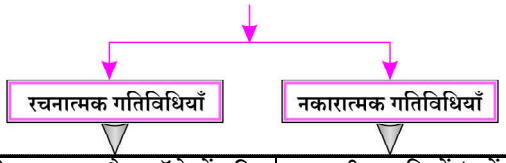

1.	राष्ट्रीय स्कूल और कॉलेजों की स्थापना	सरकारी उपाधियों/पदों का त्याग
2.	पंचायतों की स्थापना	सरकारी स्कूल, कॉलेज, अदालतों का बहिष्कार
3.	हिन्दू–मुस्लिम एकता बनाए रखना	सरकारी नौकरियों से इस्तीफा देना
4.	शराबबन्दी	करों की अदायगी न करना।
5.	छूआछूत का उन्मूलन	विदेशी वस्त्रों की होली जलाना।
6.	चरखों द्वारा निर्मित स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार–प्रसार	सरकारी उत्सवों का बहिष्कार

- गाँधी ने विश्वास दिलाया कि यदि इन सभी कार्यक्रमों को पूरी तरह से लागू किया गया तो एक वर्ष में स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा।
- असहयोग आन्दोलन के दौरान ही गाँधीजी ने **कैसर–ए–हिन्द** की उपाधि तथा **बोअर पदक** वापस लौटा दिए, जिसका अनुकरण अन्य भारतीयों ने भी किया।
- जमनालाल बजाज (गाँधी के 5वें पुत्र कहलाते हैं) ने गाँधीजी से प्रेरित होकर **राय बहादुर** की उपाधि वापस लौटा दी।
- असहयोग आंदोलन के दौरान ही **17 नवम्बर 1921** ई. को **प्रिंस ऑफ वेल्स** का भारत आगमन हुआ। इसके विरोध में पूरे देशभर में हड़तालों, जुलूसों एवं सभाओं का आयोजन किया गया। इस पर ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी रूख अपनाते हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व खिलाफत कमेटी को असंवैधानिक घोषित कर दिया।
- कांग्रेस के विजयवाड़ा अधिवेशन (1921) में कार्यकर्ताओं द्वारा खादी महंगी होने की बात पर गाँधीजी ने कम कपड़े पहनने की सलाह दी तथा स्वयं भी आजीवन मात्र लंगोटी पहनने का निश्चय किया।
- **5 फरवरी 1922 ई.** को उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले में **चौरा–चोरी कांड** हुआ जिसमें 1 थानेदार व 21 सिपाहियों को थाने में जिंदा जला दिया गया।
- इस हिंसात्मक घटना से आहत होकर **12 फरवरी 1922** को गाँधीजी ने **बारदोली (गुजरात)** में हुई कांग्रेस कमेटी की बैठक में असहयोग आंदोनल को स्थगित करने की घोषणा कर दी।

Note :– कुछ स्रोतों में चौरा–चौरी की घटना की तिथि 4 फरवरी माना गया है। 5 फरवरी तिथि R.B.S.E. की कक्षा–12 इतिहास पुस्तक के अनुसार है।

- इस अवसर पर सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था–**''जिस समय जनता का उत्साह अपने चरम पर था, उस समय पीछे हटने का आदेश देना राष्ट्रीय अनर्थ से कम न था।''**
- दिल्ली में 24 फरवरी 1922 को आयोजित अखिल भारतीय काँग्रेस समिति की बैठक में असहयोग आन्दोलन वापस लेने के लिए डॉ. मुंजे ने गाँधी के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
- 10 मार्च 1922 ई. को गाँधीजी को गिरफ्तार कर न्यायाधीश ब्रूमफील्ड ने उन्हें 6 वर्ष की कैद की सजा सुनाई।
- असहयोग आंदोलन का सामाजिक आधार बाद के सभी आंदोलनों से अधिक व्यापक था इसमें मध्यम वर्ग द्वारा नेतृत्व किया गया, बहिष्कार की नीति को व्यावसायिक वर्ग का समर्थन प्राप्त हुआ।
- किसानों, छात्रों, महिलाओं एवं मुसलमानों की भी व्यापक भागीदारी रही थी।
- मुस्लिमों की ऐसी भागीदारी न अतीत के किसी आंदोलन में थी और न भविष्य के किसी राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान रही।

Note :– असहयोग आंदोलन के दौरान 1921 ई. में केरल के मालाबार क्षेत्र में **मोप्पला विद्रोह** हुआ जिसमें मोप्पला मुसलमानों व हिन्दू जमींदारों के बीच साम्प्रदायिक दंगे हुए।

- असहयोग आंदोलन के बाद कांग्रेस की भावी राजनीति को लेकर आपस में मतभेद हुआ, जो लोग गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को चलाए रखने के पक्ष में थे। वे **अपरिवर्तनवादी** कहलाए इनमें राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल, डॉ. अंसारी, सी. रोजगोपालाचारी प्रमुख थे।
- जबकि जो लोग विधान मण्डलों के चुनाव में भाग लेकर वहाँ सरकार के साथ असहयोग करना चाहते थे वे **परिवर्तनवादी** कहलाए। इनमें सी.आर. दास एवं मोतीलाल नेहरू प्रमुख थे।

स्वराज्य पार्टी (1923 ई.)

- **मार्च 1923** ई. में सी.आर. दास व मोतीलाल नेहरू ने अपने समर्थकों के साथ **इलाहाबाद** में स्वराज्य पार्टी की स्थापना की।
- स्वराज्य पार्टी का उद्देश्य विधान मण्डलों में पहुँचकर 1919 के अधिनियम का खोखलापन सामने लाना तथा असहयोग को विधान मण्डलों तक पहुँचाना था।
- 1923 ई. के चुनावों में केन्द्रीय विधान मण्डल की 101 सीटों में से **42 सीटों** पर स्वराज्य पार्टी ने जीत हासिल की। मध्य प्रांत में

डॉ. भीमराव अम्बेडकर-राष्ट्रीय आंदोलन

जीवन परिचय

जन्म	–	14 अप्रेल, 1891 को इन्दौर के पास मऊ छावनी में।
पिता का नाम	–	रामजी अंबेडकर
माता का नाम	–	भीमा बाई
जीवन साथी	–	पहली पत्नी का नाम रमा बाई तथा दूसरी पत्नी का नाम सविता था।
शिक्षा	–	कोलम्बिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) एवं लंदन विश्वविद्यालय
मृत्यु	–	1956 ई.
पुस्तकें	–	'Who are Shudras', 'The Untouchables', 'Annihilation of Cast'

डॉ. भीमराव अंबेड़कर

- ❖ अम्बेडकर गायकवाड़ महाराजा की छात्रवृति से अमेरिका गये और कोलम्बिया विश्व विद्यालय में अध्ययन किया। बाद में ये बडौदा के गायकवाड़ महाराजा के निजी सचिव भी रहे।
- ❖ 1924 ई. में **बहिष्कृत हितकारिणी** सभा स्थापित की।
- ❖ 1927 ई. में बहिष्कृत भारत नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया और 1927 ई. में ही **समता समाज संघ** की स्थापना की।
- ❖ 1926 ई. में अम्बेडकर बम्बई विधान परिषद् के सदस्य मनोनीत किए गए।
- ❖ अम्बेडकर ने मार्च, 1927 ई. में महाद मीठा जल सत्याग्रह महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में महाद नामक स्थान शुरू किया, जिसके द्वारा दलितों को सार्वजनिक तालाब से पानी के उपयोग का अधिकार मिला।
- ❖ 1930 ई. में अम्बेडकर अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ के अध्यक्ष बने। अखिल भारतीय दलित संघ का पहला सम्मेलन 1918 ई. में हुआ था।
- ❖ अम्बेडकर ने दलित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में लंदन में हुए तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया।
- ❖ 26 सितम्बर 1932 को अम्बेडकर ने गाँधीजी के साथ पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किये।
- ❖ अक्टूबर 1936 ई. में अम्बेडकर ने इंडिपेन्डेन्ट लेबर पार्टी (सवतंत्र मजदूर दल) की स्थापना की, जिसका नाम बदलकर बाद में 1942 ई. अखिल भारतीय अनुसूचित जाति संघ रखा गया।
- ❖ **मुक्ति दिवस**–1939 ई. में वायसराय 'लार्ड लिनलिथगो' द्वारा कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों से बिना विचार-विमर्श किए ही भारत को द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल किया गया तो विरोध स्वरूप 1939 में कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों ने त्यागपत्र दे दिया। इस KO2mH$o_pmb_ brJ d ^r_and Aå~oS>H$a Zo **22 दिसम्बर 1939** को **मुक्ति दिवस (डिलिवरेन्स डे)** के रूप में मनाया।
- ❖ 1945 ई. में दलित लोगों में शिक्षा के प्रसार के लिए **'पीपल्स एजुकेशन सोसायटी'** की स्थापना की।
- ❖ 1946 ई. में अम्बेडकर बंगाल से संविधान संभा मे चुने गये। विभाजन के बाद वे बम्बई से संविधान सभा मे चुने गये।
- ❖ 29 अगस्त 1947 को अम्बेडकर संविधान सभा की प्रारुप समिति के अध्यक्ष चुने गये। इसलिए उन्हें भारतीय संविधान का निर्माता कहा जाता है।
- ❖ स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में डॉ. अम्बेडकर को विधि मंत्री बनाया गया। 1952 ई. में वे बम्बई से राज्यसभा सदस्य चुने गए।
- ❖ अम्बेडकर ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। 1956 में ही अम्बेडकर का निधन हो गया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद-राष्ट्रीय आंदोलन

जीवन परिचय

जन्म	–	11 नवम्बर, 1888 को मक्का (सऊदी अरब) में हुआ।
पिता का नाम	–	मोहम्मद खैरुद्दीन (नृजातीय रूप से फारसी)
माता का नाम	–	आलिया
जीवन साथी	–	जुलैखा बैगम
शिक्षा	–	अल-अजहर विश्वविद्यालय, काहिरा।
मृत्यु	–	22 फरवरी, 1958 को दिल्ली में।
पुस्तकें	–	'India wins Freedom', 'गुबार-ए-खातिर', 'तर्जमान उल कुरान'।
समाचार पत्र	–	अल हिलाल, अल बिलाग, दी कॉमरेड।

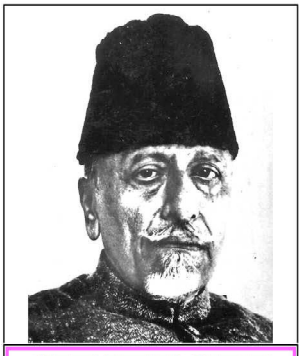

अबुल कलाम आजाद

8 राजस्थान की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता
[Ancient Culture & Civilization of Rajasthan]
कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर बैराठ
[Kalibangan, Ahar, Ganeshwar, Bairath]

राजस्थान की यह मरुभूमि विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं की जननी रही है। यहाँ पाषाणयुगीन एवं ताम्र पाषाण युगीन सभ्यताओं का उदय हुआ है, जिनमें कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बैराठ, बागौर आदि प्रमुख हैं। ये सभ्यताएँ न केवल स्थानीय सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती हैं अपितु अपनी चित्रकला, मृदभांड शिल्प एवं धातु तकनीकी कौशल के कारण प्राचीन विश्व की अन्य सभ्यताओं के भी संपर्क में थी। नए पाठ्यक्रमानुसार इस अध्याय में चार प्रमुख सभ्यताओं का वर्णन किया गया है।

अध्ययन बिन्दु

कालीबंगा सभ्यता	आहड़ सभ्यता	गणेश्वर	बैराठ सभ्यता
हनुमानगढ़	उदयपुर	सीकर	जयपुर

कालीबंगा सभ्यता

- कालीबंगा सैन्धव सभ्यता की **'तीसरी राजधानी'** मानी जाती है। राजस्थान के **हनुमानगढ़** जिले में अवस्थित यह सभ्यता आज से लगभग 6 हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है।
- प्राचीन सरस्वती एंव दृषद्वती नदियों (वर्तमान घग्घर नदी क्षेत्र) के मध्य पल्लवित यह सभ्यता- पूर्व हड़प्पाकालीन, हड़प्पाकाल एवं उत्तर हड़प्पाकालीन सभ्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है।
- कालीबंगा की खोज सर्वप्रथम 1952 ई. में **'अमलानन्द घोष'** द्वारा की गई तथा उत्खनन कार्य 1960-1969 ई. के मध्य **बी.बी. लाल, बी.के. थापर, एम.डी. खरे** एवं **के.एम. श्रीवास्तव** द्वारा करवाया गया।
- कालीबंगा के उत्खनन में हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक युग के पाँच स्तर मिले हैं।
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ- ''काले रंग की चूड़ियाँ'' है।
- कालीबंगा सभ्यता की सर्वप्रथम व्यवस्थित जानकारी इटली के विद्वान **डॉ.एल.पी. टेसीटोरी** द्वारा दी गई।

कालीबंगा का नगर नियोजन

- कालीबंगा एक विकसित नगरीय सभ्यता थी। यहाँ का नगर सुव्यवस्थित योजनानुसार बसा हुआ था। यह पश्चिमी और पूर्वी दो टीलों पर बसा हुआ था। कालीबंगा में दुर्ग व नगर क्षेत्र दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरे हुए थे।

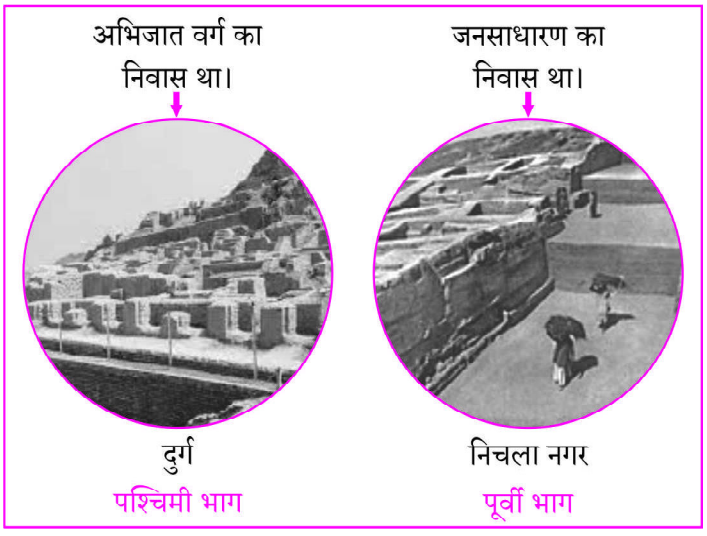

- कालीबंगा की सड़कें पाँच से साढ़े पाँच मीटर चौड़ी थी एवं समकोण पर कटती थीं। सड़कों के किनारे गलियाँ निकली हुई थी; जिन पर आवासीय भवन बने हुए थे।
- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि के विपरीत कालीबंगा के घर **कच्ची ईंटों** (धूप मे सुखाई हुई) के बने हैं। कमरो एवं फर्श को चिकनी मिट्टी से लीपा जाता था। लगभग सभी घरों में अपने-अपने कुएँ थे।
- कालीबंगा से सेलखड़ी की मुहरें एवं मिट्टी की मुहरें मिली हैं। जिन पर हड़प्पाकालीन लिपि के समान अक्षर मिले हैं किन्तु इसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

- कालीबंगा में शवों की अंत्येष्टि की तीनों विधियों के प्रमाण मिले हैं-
  (i) पूर्ण समाधिकरण (Complete Burial)
  (ii) आंशिक समाधिकरण (Partial Burial)
  (iii) दाह-कर्म (Cremation)

कालीबंगा से मिले महत्त्वपूर्ण साक्ष्य

- कालीबंगा से प्राप्त पूर्व हड़प्पाकालीन **'जुते हुए खेत'** (हल के निशान) के साक्ष्य संसार में प्राचीनतम हैं।
- हवन वेदियाँ (अग्निकुण्ड)।
- कालीबंगा से **'बेलनाकार मुहर'** के साक्ष्य मिलते हैं, जो समकालीन मेसोपाटामियाँ की सभ्यता में प्रचलित थी।

- एक युगल समाधि एवं प्रतीकात्मक समाधि के प्रमाण।
- फर्श में **अलंकृत ईंटों** का प्रयोग।
- **पूरा हाथीदाँत** केवल कालीबंगा से मिला है।
- मिट्टी की काले रंग की चुड़ियाँ, जिसे पंजाबी भाषा में बंगा जाता है।
- भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य।
- कालीबंगा से **खोपड़ी की शल्य चिकित्सा** के प्रमाण मिले हैं। (ऐसे प्रमाण लोथल (गुजरात) से भी मिले हैं।)
- यहाँ लकड़ी से बनी नालियों के अवशेष मिले हैं, जो अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं।
- कालीबंगा से मातृदेवी की कोई मूर्ति नहीं मिली है, जबकि लगभग सभी सैन्धव नगरों में ऐसी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
- **ईंटों से निर्मित चबूतरे**, ऊँट की अस्थियाँ, ताँबे की वृषभमूर्ति, खिलौना गाड़ी, ताँबे से बने औजार, कब्रगाह, **एक साथ दो फसलें** उगाने के साक्ष्य आदि कालीबंगा से प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

आहड़ की सभ्यता (उदयपुर)

- यह उदयपुर शहर के पास बहने वाली आयड़ नदी (बेड़च) के किनारे स्थित ताम्रपाषाणिक सभ्यता है, जो दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान में सभ्यता का महत्त्वपूर्ण केन्द्र थी।
- डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार यह सभ्यता 1900 ई.पू.- 1200 ई. पू. की है। आहड़ के उत्खननों से चार हजार वर्ष पुरानी पाषाण धातुयुगीन सभ्यता के अवशेष सामने आए हैं।
- आहड़ सभ्यता की खोज 1953 ई. में **अक्षय कीर्ति व्यास** द्वारा की गई तथा इसका व्यापक स्तर पर उत्खनन क्रमशः **रतन चन्द्र अग्रवाल** एवं **एच.डी. सांकलिया** के निर्देशन में हुआ।
- आहड़ नदी बनास सभ्यता का हिस्सा थी, इसलिए इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

- यह सभ्यता एक टीले के नीचे दबी हुई थी, जिसे धूलकोट (धूल यानि मिट्टी का टीला) कहते हैं। इस सभ्यता के अन्य नाम ताम्रवती नगरी, आघाटपुर एवं धूलकोट हैं।
- आहड़ के उत्खनन में यहाँ बस्तियों के **आठ स्तर** मिले हैं।
- इस सभ्यता के लोग मकान बनाने में **धूप में सुखाई गई ईंटों** एवं पत्थरों का प्रयोग करते थे। मकानों से जल निकासी हेतु नालियों के प्रमाण भी आहड़ से मिले है।
- आहड़ के लोग मृतकों के साथ आभूषणों को दफनाते थे, जो इनके 'मृत्यु के बाद भी जीवन की अवधारणा का समर्थक होने की पुष्टि करता है।
- यहाँ के उत्खनन में मिट्टी के बर्तन सर्वाधिक मिले हैं, जो आहड़ को **'लाल-काले मिट्टी के बर्तन वाली संस्कृति'** का प्रमुख केन्द्र सिद्ध करते हैं।
- उत्खनन से प्राप्त ठप्पों से यहाँ **रंगाई-छपाई व्यवसाय** के उन्नत होने का अनुमान भी लगाया जाता है।
- मकानों में एक से अधिक चूल्हें मिलना, आहड़ में **संयुक्त परिवार प्रथा** की विद्यमानता को प्रकट करता है।

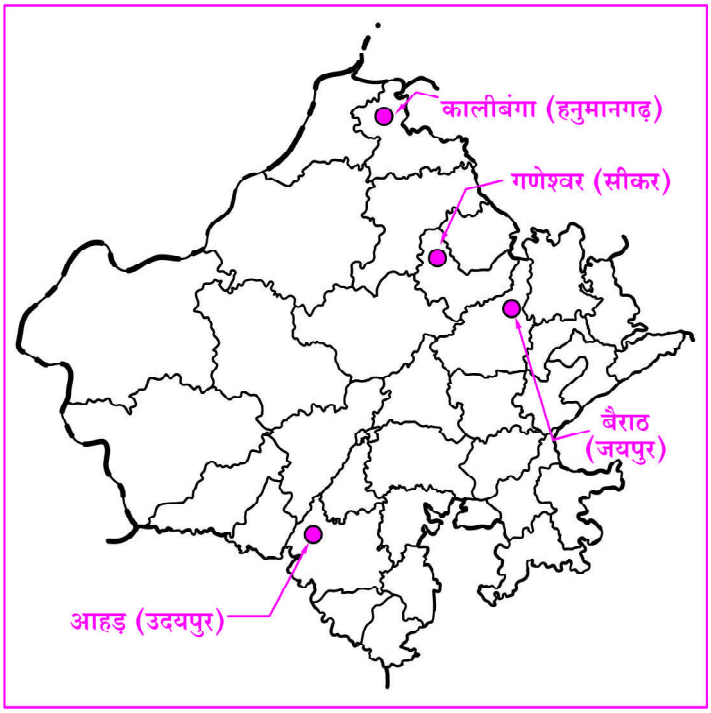

- आहड़ का दूसरा नाम **'ताम्रवती नगरी'** यहाँ ताँबे के औजारों एवं उपकरणों के अधिक प्रयोग के कारण रखा गया है।

- इसी समय एक मुस्लिम ज्योतिषी '**मुहम्मद शरीफ**' ने भविष्यवाणी की कि- ''मंगल का तारा पश्चिम में है, इसलिए पूर्व से लड़ने वाले पराजित होंगे।''
- इस भविष्यवाणी को सुनकर बाबर ने जहाँ एक ओर युद्ध की तैयारी जारी रखी, वहीं दूसरी ओर रायसेन के सरदार '**सलहदी तंवर**' के माध्यम से सुलह की बात भी चलाई किन्तु महाराणा के सरदारों को सलहदी की मध्यस्थता पसंद नहीं आई।

खानवा का युद्ध (1527 ई.)

- कविराज श्यामलदास कृत '**वीर विनोद**' के अनुसार 16 मार्च 1527 ई.की सुबह खानवा के मैदान (भरतपुर) में बाबर व सांगा के मध्य यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ। (कुछ स्त्रोतों में यह तिथि 17 मार्च भी मिलती है। लेकिन कालूराम शर्मा व अधिकांश इतिहासकारों ने 16 मार्च ही माना है।)
- इस युद्ध में सांगा के घायल होने पर '**झाला अज्जा**' ने छत्र धारण कर युद्ध लड़ा, किन्तु राजपूतों को पराजय का सामना करना पड़ा।
- विजय के बाद बाबर ने '**गाजी**' की पदवी धारण की और विजय चिह्न के रूप में राजपूत सैनिकों के सिरों की एक मीनार बनाई।

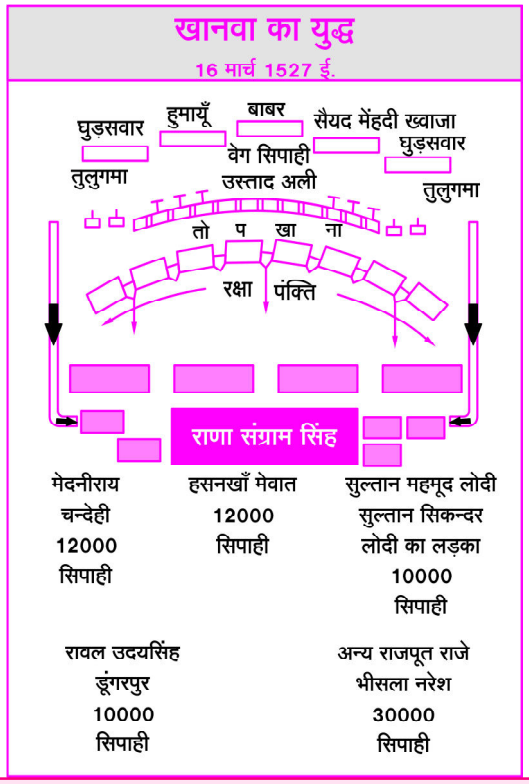

Note :– खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा का सेनापति **हसन खाँ मेवाती** था।

खानवा के युद्ध में सांगा की पराजय के कारण

- बयाना विजय के तुरन्त बाद ही युद्ध न करके बाबर को तैयारी करने का पूरा समय देना।
- राजपूतों की परम्परागत युद्ध तकनीक एवं हथियार।
- बाबर का तोपखाना एवं तुलुगनुमा पद्धति युद्ध में निर्णायक रहे, जिन्होंने सूर्यास्त तक राजपूतों को पराजित कर दिया।
- महाराणा सांगा के घायल होकर रणक्षेत्र से बाहर चले जाने पर सेना का मनोबल कमजोर हुआ।
- राजपूतों में आदेश की एकता का अभाव क्योंकि सम्पूर्ण सेना अलग-अलग सरदारों के नेतृत्व में एकत्रित हुई थी।

Note :– खानवा के युद्ध के बाद राजपूतों की सर्वोच्चता का अंत हुआ और भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य स्थापित हो गया।

- महाराणा सांगा को '**इरिच**' नामक स्थान पर उसके युद्ध विरोधी सरदारों ने जहर दे दिया, क्योंकि होश में आने के बाद वह बाबर से पराजय का बदला लेने चंदेरी जा रहा था।
- विष का प्रभाव होने पर **30 जनवरी 1528 ई.** को **कालपी** नामक स्थान पर मात्र 46 वर्ष की आयु में सांगा का देहांत हो गया।
- अमरकाव्य वंशावली के अनुसार सांगा का अंतिम संस्कार माण्डलगढ़ में किया गया।
- खानवा के युद्ध तक सांगा के शरीर पर कम से कम 80 घावों के निशान थे, जो उसे '**एक सैनिक का भग्नावशेष**' सिद्ध कर रहे थे।
- सांगा अंतिम नरेश था, जिसके नेतृत्व में लगभग सभी राजपूत राजा बाबर को हराने हेतु एक ध्वज के नीचे इकट्ठे हुए थे।
- स्वयं बाबर ने भी सांगा की प्रशंसा में लिखा है कि- ''राणा सांगा अपनी बहादुरी और तलवार के बल पर बहुत बड़ा हो गया था। मालवा, दिल्ली और गुजरात का कोई अकेला सुल्तान उसे हराने में असमर्थ था।''

Note :– मालवा के महमूद खिलजी को गिरफ्तार करने की खुशी में सांगा ने **चारण हरिदास** को चित्तौड़ का सम्पूर्ण राज्य दे दिया था, किन्तु हरिदास ने संपूर्ण राज्य न लेकर 12 गाँवों में ही अपनी खुशी प्रकट की।

महाराणा प्रताप व मुगल

- महाराणा प्रताप का जन्म विक्रम संवत् 1597, ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया **(9 मई 1540 ई.)** को कुम्भलगढ़ के दुर्ग में हुआ। प्रताप **महाराणा उदय सिंह** के पुत्र थे। इनकी माता का नाम **जैवन्ता बाई** था। इनके बचपन का नाम **कीका** था।

महाराणा प्रताप

- उदयसिंह की अन्य रानी धीरकंवर ने अपने पुत्र जगमाल को मेवाड़ की गद्दी पर बैठाने के लिए उदयसिंह को राजी कर लिया इसलिए उदयसिंह के बाद

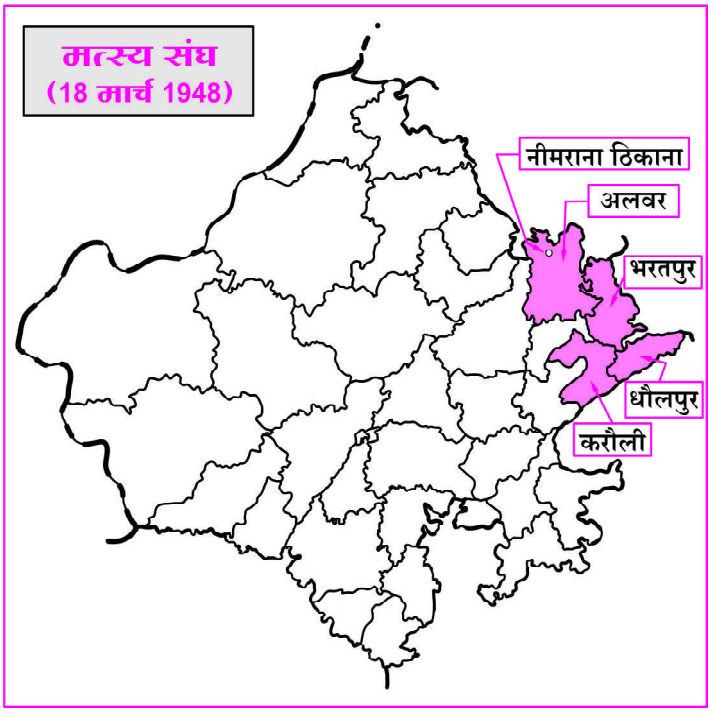

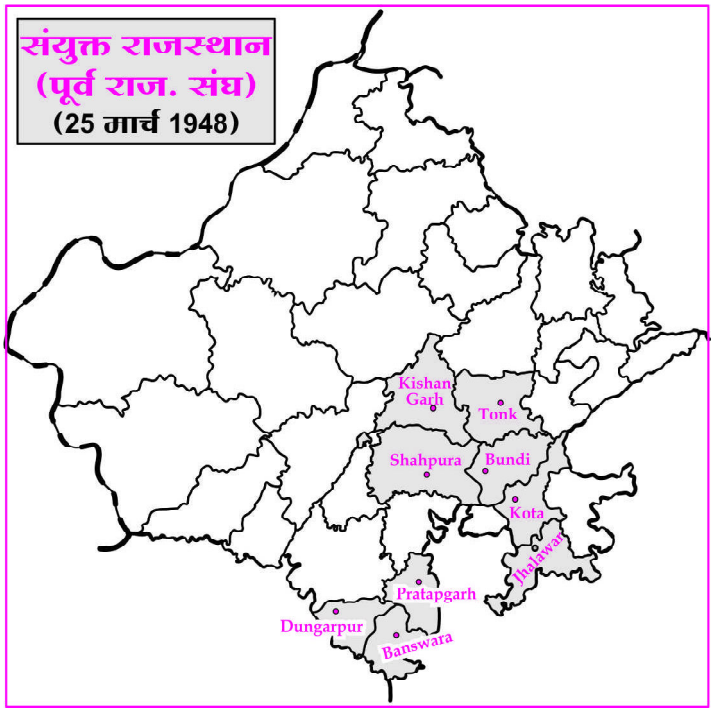

II. चरण, संयुक्त राजस्थान (पूर्व राजस्थान संघ), 25 मार्च 1948

- इस चरण में 9 रियासतों व 1 ठिकाना को मिलाकर संयुक्त राजस्थान संघ बनाया गया। ये रियासतें बाँसवाड़ा-डूँगरपुर-प्रतापगढ़, कोटा-बूँदी-झालावाड़, टोंक-किशनगढ़-शाहपुरा एवं कुशलगढ़ (ठिकाना) थी।
- इस संघ की आबादी 23.5 लाख एवं वार्षिक आय 1.90 करोड रुपये थी।
- मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह एवं दीवान एस.वी.राममूर्ति ने इस संघ में शामिल होने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था।
- प्रस्तावित संयुक्त राजस्थान में कोटा सबसे बड़ी रियासत थी, अतः कोटा के महाराव **भीमसिंह को राजप्रमुख** का पद दिया गया।
- कुलीय परम्परा में बूँदी के महाराव बहादुर सिंह का स्थान कोटा से ऊँचा था, इसलिए उन्होंने भीमसिंह को राजप्रमुख बनाए जाने का विरोध किया। बाद में बूँदी महाराव का सम्मान बनाए रखने के लिए उन्हें **उप-राजप्रमुख** बनाया गया।
- बाँसवाड़ा के महारावल चन्द्रवीर सिंह ने विलय-पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए कहा-**''मैं अपने डेथ वारन्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।''**
- 25 मार्च 1948 ई. को **एन. वी. गाड़गिल** द्वारा संयुक्त राजस्थान का विधिवत् उद्घाटन किया गया।
- श्री **गोकुललाल असावा** को इस संघ का प्रधानमंत्री बनाया गया।

Note :- मेवाड़ प्रजामण्डल के प्रमुख नेता एवं संविधान निर्मात्री समिति के सदस्य **'माणिक्यलाल वर्मा'** ने मेवाड़ द्वारा संघ में शामिल नहीं होने का विरोध करते हुए कहा कि- ''मेवाड़ की 20 लाख जनता के भाग्य का फैसला अकेले महाराणा साहब और उनके प्रधान राममूर्ति नहीं कर सकते।

III. चरणः संयुक्त राजस्थान (राजस्थान संघ) में मेवाड़ का विलय (18 अप्रैल 1948)

- संयुक्त राजस्थान में विलय के लिए मेवाड़ रियासत पर प्रजामंडल के नेताओं एवं जनता ने दबाव बनाया। अतः मेवाड़ के दीवान सर राममूर्ति ने विलय के लिए भारत सरकार के समक्ष महाराणा की ओर से तीन मांगे रखी -
  - (i) महाराणा को संयुक्त राजस्थान का वंशानुगत राजप्रमुख बनाया जाए।
  - (ii) महाराणा को 20 लाख रु. **प्रिवी-पर्स** दिया जाए।
  - (iii) उदयपुर को संयुक्त राजस्थान की राजधानी बनाया जाए।
- इनमें 20 लाख प्रिवी-पर्स को छोड़कर शेष मांगे मान ली गई। प्रिवी-पर्स केवल 10 लाख ही रखा गया, किन्तु वार्षिक अनुदान के रूप में 5 लाख रुपये एवं धार्मिक अनुष्ठान हेतु 5 लाख रुपये स्वीकृत किए गए।
- 11 अप्रैल 1948 ई. को मेवाड़ ने विलय-पत्र पर हस्ताक्षर किए।
- इस संघ का उद्घाटन **पं. जवाहरलाल नेहरू** ने **18 अप्रैल 1948** को उदयपुर में किया।
- मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह राजप्रमुख, कोटा के महाराज वरिष्ठ उप-राजप्रमुख तथा बूँदी व डूँगरपुर के शासक कनिष्ठ उप-राजप्रमुख घोषित किए गए।

- परबतसर (नागौर) का तेजाजी पशु मेला राजस्थान का सबसे बड़ा पशुमेला है, जो प्रतिवर्ष तेजा दशमी (भाद्रपद शुक्ल दशमी) को लगता है।
- राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में तेजाजी के अश्वावरोही मूर्ति युक्त चबूतरे (थान) बने हुए है।
- बाँसी दुगारी (बूँदी) तेजाजी की कर्मस्थली रहा है। यहाँ पर विशाल सरोवर के किनारे तेजाजी का पवित्र तीर्थ स्थान है।

5. वीर कल्लाजी

- वीर कल्लाजी राठौड़ का जन्म मेड़ता के निकट सामियाना (नागौर) के राव अचलसिंह के पुत्र के रूप में हुआ। ये भक्तिमति मीराँबाई के भतीजे थे।
- कल्लाजी जयमल को कंधे पर बिठाकर अकबर की सेना के विरुद्ध युद्ध लड़ते हुए 1567-68 ई. में चित्तौड़गढ़ में वीर गति को प्राप्त हुए और चार हाथों वाले देवता कहलाये।
- चित्तौड़ दुर्ग के भैंरोपोल में इनकी छतरी बनी हुई है तथा रनेला (चित्तौड़गढ़) इनका प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।
- बाँसवाड़ा व चित्तौड़ में इनकी मान्यता अधिक है। डूँगरपुर जिले में सामलिया गाँव भी इनका प्रमुख तीर्थ स्थल है।
- कल्लाजी नागणेची माता के भक्त एवं चमत्कारिक योगी और सिद्ध वैद्य थे।
- उपनाम–शेषनाग का अवतार, योगी, कमधज, चार हाथों वाले देवता केहर, कल्याण।

6. देवनारायणजी

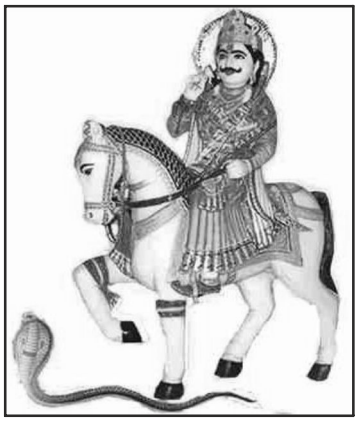

- गुर्जर समाज एवं आमजन के आराध्य देवनारायणजी का जन्म 1243 ई. में भीलवाड़ा जिले की आसीन्द तहसील के गोठां दड़ावता गाँव के निकट मालासेरी डूँगरी में हुआ।
- इनके पिता नागवंशीय गुर्जर सवाई भोज बगड़ावत, माता सेदू खटाणी और पत्नी पीपलदे परमार धारानगरी की निवासी थी।
- देवजी के बचपन का नाम उदयसिंह (ऊदल) था। इनके घोड़े का नाम लीलागर था।
- राजस्थान में देवनारायणजी के पाँच प्रमुख देवरे हैं- (i) गोठां दड़ावता (आसीन्द, भीलवाड़ा), (ii) देवीधाम जोधपुरिया (निवाई, टोंक), (iii) देवमाली (अजमेर) (iv) देवडूँगरी (चित्तौड़गढ़) (v) पिचियाक (जोधपुर) इनमें से प्रथम चार को देवजी के चार धाम माना जाता है।
- देवजी के देवरों (पूजास्थल) में सामान्यतः इनकी प्रतिमा की जगह एक बड़ी ईंट की पूजा होती है।
- देवनारायणजी की फड़ सबसे प्राचीन एवं सबसे लम्बी चित्रित फड़ माना जाती है। इसका वाचन जन्तर वाद्ययंत्र के साथ गुर्जर भोपे करते हैं। 1992 ई. में इस फड़ पर भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी किया गया था।

7. हड़बूजी

- हड़बूजी, मेहाजी सांखला के पुत्र थे और बालीनाथ इनके गुरु थे।
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे, रामदेवजी ने 24 वाणियों में इनका उल्लेख करते हुए कहा है–''हड़बूजी सांखला हरदम हाजिर गांव बेंगटी माही, दूजी देह म्हारी ही ज्याणज्यों हाँ मासी जाया भाई।''
- बेंगटी गाँव (फलौदी, जोधपुर) हड़बूजी का प्रधान स्थान है, यहाँ पर 'हड़बूजी की गाड़ी' की पूजा होती है। इसी बैलगाड़ी में वे विकलांग गायों के लिए चारा लाते थे।
- हड़बूजी शकुनशास्त्र के ज्ञाता माने जाते है। इनका वाहन सियार है।

8. मेहाजी

- मेहाजी मांगलिया राजस्थान के पाँच पीरों में शामिल हैं।
- मेहाजी का प्रमुख थान बापिणी गाँव (जोधपुर) में है, जहाँ प्रतिवर्ष भाद्रप्रद कृष्ण अष्टमी (जन्माष्टमी) को मेला भरता है।
- इनके प्रिय घोड़े का नाम किरड़–काबरा था।

9. मल्लीनाथजी

- रावल मल्लीनाथजी मालाणी के शासक राव सलखा राठौड़ के पुत्र थे, इनकी माता जाणी दे और पत्नी भक्तिमति रानी रूपां दे थी।
- बाड़मेर जिले के मालाणी क्षेत्र का नामकरण इनके नाम पर हुआ है।
- इन्होंने युद्ध में फिरोज तुगलक के सूबेदार निजामुद्दीन की तेरह सैन्य टुकड़ियों को हराया था।
- मल्लीनाथजी का प्रमुख मंदिर बाड़मेर जिले में बालोतरा के निकट तिलवाड़ा गाँव में स्थित है। यहाँ पर प्रतिवर्ष चैत्र माह में 'मल्लीनाथ पशु मेला' भरता है जिसका प्रारम्भ 1374 ई. में हुआ।

10. तल्लीनाथजी

- तल्लीनाथजी का मूल नाम गोगादेव राठौड़ था, वे शेरगढ़ क्षेत्र में शेखाला ठिकाने (जोधपुर) के शासक थे, गुरु जालंधरनाथ से नाथ पंथ में दीक्षा लेकर तल्लीनाथ कहलाये।

- यहाँ की चित्रकला को कलाविद् भारतीय कला के इतिहास में **'लघु आश्चर्य'** की संज्ञा देते है।
- इस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय **एरिक डिकिन्सन** व **फैयाज अली** को है।
- राजा सावंतसिंह का काल (1748-1764 ई.) किशनगढ़ शैली का स्वर्णयुग माना जाता है। सावंतसिंह **नागरीदास** के उपनाम से प्रसिद्ध थे।
- सावंतसिंह स्वयं एक अच्छा चित्रकार था। उसके दरबारी चित्रकार **मोरध्वज निहालचंद** ने 'बणी-ठणी' (नागरीदास की प्रेमिका) का चित्रांकन कर किशनगढ़ शैली को सर्वोच्च स्थान पर पहुँचा दिया।

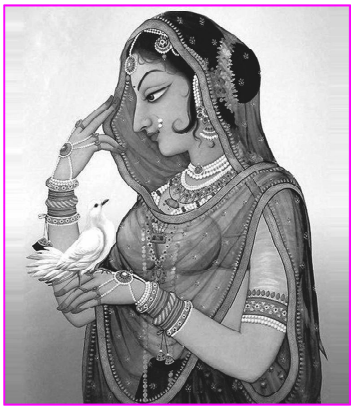

चित्र : बणी-ठणी

- निहालचंद ने बणी-ठणी को राधा के रूप में चित्रित किया है।
- बणी-ठणी को एरिक डिकिन्सन ने भारत की मोनालिसा कहा है।

Note :- भारत सरकार द्वारा **1973** ई. में बणी-ठणी पर डाक टिकट जारी किया गया था।

- **'चाँदनी रात की संगीत गोष्ठी'** अमरचन्द द्वारा चित्रित किशनगढ़ शैली का दूसरा प्रसिद्ध चित्र है।
- नानकराम, सीताराम, सूरध्वज, मूलराज, मोरध्वज निहालचंद, बदनसिंह, रामनाथ, सवाईराम, लालड़ीदास आदि किशनगढ़ शैली के उल्लेखनीय चित्रकार हैं।
- **विशेषताएँ-**
  - **पुरुषाकृति**- लंबा इकहरा नील छवियुक्त शरीर, उन्नत ललाट, मोती जड़ित श्वेत या मूँगिया पगड़ी, **खंजनाकृत नयन**।
  - **स्त्री आकृति**- तन्वंगी, लंबी, गौरवर्ण, नुकीली चिबुक, सुराहीदार गर्दन, पतली कमर, **लम्बी कमल पंखुडी-सी आँखे।**
  - **प्रकृति चित्रण**- दूर-दूर तक फैली झील, उसमें कलरव करते हंस, बतख, सारस, तैरती नौकाएँ, रंग-बिरंगे उपवन।
  - चाँदनी रात में राधा-कृष्ण की केलि-क्रीडाएँ तथा प्रातः कालीन व संध्याकालीन **बादलों का सिन्दूरी चित्रण** किशनगढ़ शैली की निजी विशेषताएँ हैं।
  - **रंग**- सफेद, गुलाबी, सलेटी, सिन्दूरी, नारंगी।

अजमेर शैली

- अजमेर शैली के विकास में **भिनाय, सावर, मसूदा**, जूनियाँ आदि ठिकानों की चित्रण परम्परा ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।
- अजमेर शहर में जहाँ इस शैली पर दरबारी व सामंती प्रभाव रहा, वहीं गाँवों में लोक संस्कृति व ठिकाणों में राजपूत संस्कृति का वर्चस्व बना रहा।
- जूनियाँ ठिकाने का **'चाँद'**, सावर का तैयब, नाँद का रामसिंह भाटी, खरवा का जालजी एवं नारायण भाटी, मसूदा से माधोजी व राम, अजमेर का **अल्लाबख्स** आदि इस शैली के प्रमुख चित्रकार थे।
- **उस्ना** व **साहिबा** अजमेर शैली की स्त्री चित्रकार थीं।
- जूनियाँ के चाँद द्वारा अंकित **'राजा पाबूजी'** का चित्र (1698 ई.), इस शैली का सुन्दर उदाहरण है।

Note :- केवल अजमेर शैली ही ऐसी कलम रही जहाँ **हिन्दू, मुस्लिम** और **ईसाई** तीनों धर्मों की विशेषताओं को समान प्रश्रय दिया गया।

नागौर शैली

- नागौर उपशैली में लकड़ी के कंवाड़ों एवं किलों के भित्ती चित्रण पर मारवाड़ शैली का प्रभाव है।
- **'वृद्धावस्था'** के चित्र, **बुझे हुए रंगों का प्रयोग** एवं **पारदर्शी** वेशभूषा नागौर शैली की अपनी विशेषता है।

जैसलमेर शैली

- **'मूमल'** जैसलमेर शैली का प्रमुख चित्र है।
- जैसलमेर शैली **एकदम स्थानीय शैली** है। इस पर मुगल या जोधपुर शैली का प्रभाव नहीं है।
- जैसलमेर में **'जिनभद्र सूरि पुस्तकालय'** में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संरक्षण किया गया है।

हाड़ौती स्कूल

चौहानवंशी **हाड़ा** राजाओं के अधिकार में रहने के कारण बूँदी-कोटा- झालावाड़ का क्षेत्र हाड़ौती कहलाया।

बूँदी शैली

- यह शैली मेवाड़ चित्रकला से प्रभावित थी।
- बूँदी के राव सुर्जन सिंह के काल में यह शैली मुगल चित्रकला के प्रभाव में आयी।
- बूँदी के रत्नसिंह के चित्रकला प्रेम के कारण ही जहाँगीर ने उसे **'सर बुलन्द राय'** की पदवी प्रदान की।
- राव शत्रुशाल (छत्रसाल) हाड़ा के काल में इस शैली का विशेष विकास हुआ। छत्रसाल ने प्रसिद्ध **'रंगमहल'** बनवाया, जो सुन्दर भित्ति चित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- अनिरूद्ध सिंह द्वारा दक्षिण भारत के युद्धों में भाग लेने के कारण बूँदी शैली में **दक्षिणी शैली** का प्रभाव समाविष्ट हुआ।

18 राजस्थान के लोक संगीत एवं नृत्य [Folk Music and Dance of Rajasthan]

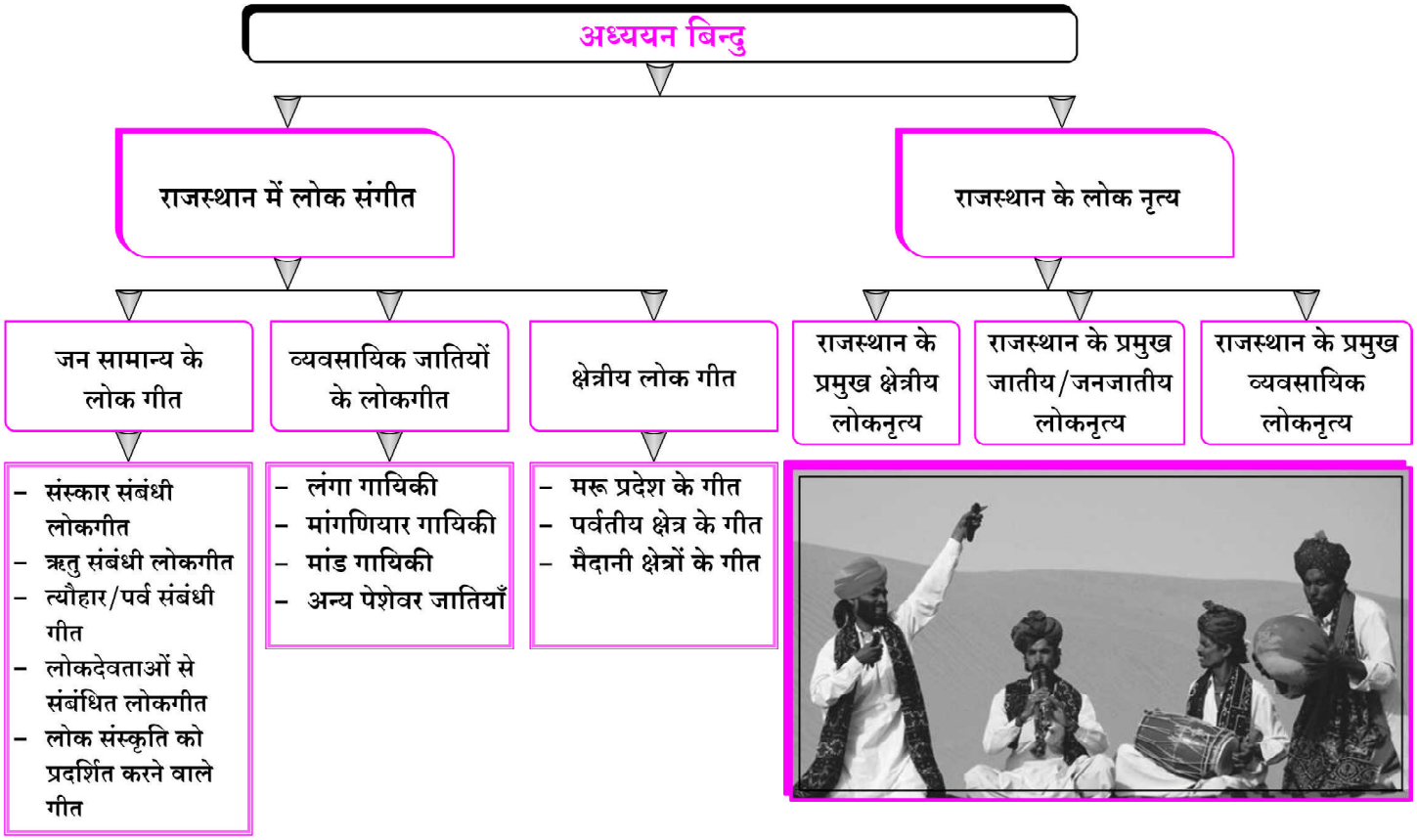

राजस्थान में लोक संगीत

- जनसाधारण के स्वाभाविक उद्‌गारों का प्रतिबिम्ब ही लोक संगीत है। लोक संगीत का मूल आधार लोक गीत हैं, जिन्हें विभिन्न उत्सवों व अनुष्ठानों में सामूहिक रूप से गाया जाता है।
- गाँधीजी के शब्दों में **''लोक गीत ही जनता की भाषा है, लोक गीत हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं।''**
- रविन्द्रनाथ टैगोर ने लोक गीतों को ''संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला'' कहा है।
- **स्टैंडर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर माइथोलॉजी एंड लेजेण्ड** में लोकगीत को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि- ''लोक गीत उस जनसमूह की संगीतमयी काव्य रचनाएँ हैं, जिसका साहित्य लेखनी अथवा छपाई से नहीं वरन् मौखिक परम्परा से अविरत संबद्ध रहता है।''
- शास्त्रीय संगीत का संबंध जहाँ बौद्धिकता में है, वहीं लोक गीत सीधे मानवीय भावनाओं से संबंधित होते हैं।
- राजस्थान के लोक संगीत को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

जन सामान्य के लोक गीत

जन-साधारण द्वारा गाए जाने वाले गीतों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है-

(1) संस्कार संबंधी गीत

इसके अन्तर्गत जन्म, विवाह आदि संस्कारों से संबंधित गीत गाये जाते हैं, जैसे जच्चा, सगाई, बना-बनी, बधावा, चाक-भात, मायरा, हल्दी, हथलेवा, जला आदि।

जच्चा

- शिशु के जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत। इनमें सामान्यतः गर्भिणी की प्रशंसा, वंशवृद्धि और शिशु के लिए मंगलकामना की जाती है। जैसे- **''होलर जाया ने हुई छै बधाई, थे म्हारा वंश बढ़ायो रे अलबेली जच्चा''**

- काकड़ वेल मतीरा पाक्या टींडसियाँ का टोरा लाग्या, राजाजी राजाजी खोलो कुँवाड़। (छोटे बच्चों का)
- मछली मंछली कितणो पाणी ? हाँ मियाजी इतणो पाणी। (छोटे बच्चों का)
- टम्पो घोड़ी फूल गुलाब रो, म्हारा महैलां पाछे कूण है ?

व्यवसायिक जातियों के लोक गीत

- राजस्थान में कई जातियों ने संगीत को व्यवसाय के रूप में अपनाया है। इनमें ढोली, मिरासी, लंगा, ढाढ़ी, कलावन्त, भाट, राव, जोगी, कामड़, वैरागी, गन्धर्व, भोपे, भवाई, राना, कालबेलिया, कथिक आदि शामिल हैं।
- इनके गीतों में माँड़, देस, सोरठ, मारु, परज, कालिंगड़ा, जोगिया, आसावरी, बिलावल, पीलू, खमाज आदि रागों की छाया प्रतिबिम्बित होती है।

लंगा गायिकी

- पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर जिलों में मांगलिक उत्सवों पर लंगा जाति अपनी विशिष्ट लोकगायन शैली के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।
- बाड़मेर का **'बड़वाणा गाँव'** लंगों का गाँव कहलाता है।
- ये कामायचा व सारंगी वाद्य यंत्रो का प्रयोग करते हैं।
- फूसे खाँ, महरदीन खाँ, अल्लादीन खाँ, करीम खाँ लंगा आदि प्रसिद्ध कलाकार हैं।
- लंगाओं का प्रसिद्ध गीत **'नीबूड़ा'** इनकी पहचान बन गया है।

माँड गायिकी

- माँड गायिकी की उत्पत्ति जैसलमेर क्षेत्र में हुई, बाद में यह विभिन्न क्षेत्रों में पल्लवित हुई। जैसे-जैसलमेर, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर व बीकानेर की माँड।
- बीकानेर की सुविख्यात माँड गायिका पद्म श्री 'अल्लाह जिलाई बाई' का 'केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश' पर्यटकों को खुला निमंत्रण है।

अल्लाह जिलाई बाई का संक्षिप्त परिचय

- जन्म 1902 बीकानेर
- मरु कोकिला नाम से प्रसिद्ध
- इन्होंने हुसैनबक्श लंगड़े से मांड गायिकी सीखी।
- 1982 में पद्म श्री से सम्मानित
- 1983 में बी.बी.सी. लंदन द्वारा कोर्ट सिंगर का अवॉर्ड
- 2003 में भारत सरकार द्वारा इनकी स्मृति में ₹ 5 का डाक टिकट जारी।

- राजस्थान की प्रसिद्ध माँड गायिकाएँ
  - गवरी देवी – बीकानेर
  - गवरी बाई – पाली
  - मांगी बाई – उदयपुर
  - बन्नो बेगम – जयपुर
  - जमीला बानो – जोधपुर

मांगणियार गायिकी

- बाड़मेर व जैसलमेर की मांगणियार जाति द्वारा विकसित।
- ये कामायचा व खड़ताल के साथ लोक गीत गाते हैं।
- सद्दीक खां, साकर खाँ (कामयचा वादक), गफूर खाँ, रूकमा देवी, रमजान खाँ, समन्दर खाँ आदि प्रमुख मांगणियार गायक हैं।
- सद्दीक खाँ मांगणियार को खड़ताल का जादूगर कहते है। सन् 2002 में इनकी स्मृति में ''सद्दीक खाँ मांगणियार लोक कला एवं अनुसंधान परिषद (लोकरंग), जयपुर'' की स्थापना की गई।

Note :- राजस्थान के पूर्वी अंचल (भरतपुर, धौलपुर क्षेत्र) में राग-रागनियों से संबंधित **'तालबंदी गायिकी'** दप्रसिद्ध है। इसमें हारमोनियम व तबला का प्रयोग किया जाता है।

राजस्थानी लोक संगीत की अन्य पेशेवर जातियाँ

क्र.सं.	जाति	विशेष विवरण
1.	कलावन्त	गायन/वादन में निपुण, अपना संबंध तानसेन से बताते हैं, अबुल-फजल के अनुसार ये ध्रुपद गायकी के डागर घराने से संबंधित हैं। सिरोही की **गंगा कलावंत** प्रसिद्ध लोक गायिका हैं।
2.	मिरासी	मारवाड़ क्षेत्र के मुस्लिम सारंगी वादक।
3.	ढोली	ढोल बजाने वाले कालाकार। इन्हें दमामी, जावड़ और नक्कारची नामों से भी जाना जाता है।
4.	राना	रणक्षेत्र में 'नगाड़ा' बजाने के कारण इन्हें राना कहा गया। ये जयपुर रियासत के ढोली होते थे।
5.	कामड़	रामदेव जी के भक्त, तेरहताली नृत्य में निपुण
6.	ढाढ़ी	हिन्दू व मुस्लिम दोनों धर्मों में ढाढ़ी यजमानों की वंशावली गाया करते थे।
7.	भाट	प्रायः सभी जातियों के अपने भाट होते हैं, ये अपने यजमानों की वंशावलियाँ लिखते हैं तथा उसका बखान करते हैं।
8.	रावल	मारवाड़ क्षेत्र की संगीतजीवी जाति, जिनकी रम्मते विख्यात है।
9.	जोगी	नाथपंथ के अनुयायी, इनका मुख्य वाद्य सारंगी व इकतारा है, ये गोपीचन्द, भर्तृहरि आदि की जीवनी गाकर अपनी आजीविका चलाते हैं।
10.	कालबेलिया	घुम्मकड़ पेशेवर जाति है, पुंगी इनका मुख्य वाद्य यंत्र है। कालबेलिया नृत्य इन्ही की देन है।
11.	भवाई	मेवाड़ क्षेत्र की संगीत व भवाई नृत्य की पेशेवर जाति है।

Note :- व्यवसायिक जातियों द्वारा युद्ध के समय गाये जाने वाले वीर रसात्मक गीत 'सिन्धु और मारू' रागों पर आधारित थे।

लेखक परिचय

महेन्द्र कुमार यादव
(RES)

वर्तमान में राजस्थान लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं में भारत एवं राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति विषय अत्यधिक महत्वपूर्ण है श्री महेन्द्र कुमार यादव को इस क्षेत्र में अध्ययन-अध्यापन का विशद अनुभव है।

आपने राजस्थान कॉलेज जयुपर से स्नातक किया है तथा इतिहास एवं संस्कृति विभाग (राजस्थान विश्वविद्यालय) से **M. A.** की डिग्री हासिल की है एवं राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (**NET**) उत्तीर्ण की है। साथ ही आपने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफसर श्री अजीत कुमार झा के मार्गदर्शन में इतिहास विषय का व्यापक अध्ययन किया है। **R.P.S.C.** द्वारा आयोजित प्राध्यापक भर्ती **2015** में आपका चयन व्याख्याता (इतिहास) के पद पर हुआ है।

पुस्तक के संदर्भ में

यह पुस्तक **R.P.S.C.** द्वारा आयोजित ग्रेड-1st प्राध्यापक (स्कूल शिक्षा) भर्ती 2022 के प्रथम प्रश्न-पत्र के खण्ड-1 के 30 अंकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है साथ ही समान पाठ्यक्रम आधारित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं। पुस्तक के अन्तर्गत **R.B.S.E., N.C.E.R.T.**, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी एवं अन्य प्रमाणिक पुस्तकों के सभी परीक्षापयोगी तथ्यों को क्रमबद्ध रूप से समाहित किया गया है।

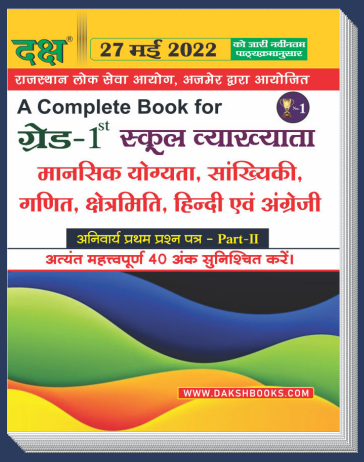

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-614 | ₹ 300/-